

किरणों की खोज में

मच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन

सरस्वती प्रेस

वाराणसी इलाहाबाद

प्रकाशक—

श्रीपतराय

सरस्वती प्रस चाराणसी

ॐ कापा राट

सचिदानन्द होरानन्द वास्त्याय

ॐ रेखाचित्र, स्केच और अल्ट्रानियाँ

लेखन द्वारा अन्तिम

ॐ फोटो चित्र

लेखन, सेठ' म तथा भारतीय पुरातन विभाग द्वारा प्रस्तुत

ॐ नृप्य मे म्पय

द्वारा—

वास्त्याय वास्त्याय

श्रीपतराय प्रकाशक द्वारा प्रकाशित । १९

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक में निम्न दो यात्राओं का वर्णन है, कालानुक्रम से उनमें से पहली 'किरणों का खोज में' का गया यात्रा है। सन् १९२९ में बी० एस-सा० परीक्षा पास करने के बाद लेखक पञ्चायत विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित 'कास्मिक रे एक्सपेडिशन' का सदस्य हो कर कश्मीर गया था। इस अभियान के नेता लेखक के मित्रान के आचार्य, फामन काल्प छाहीर के प्रोफेसर जम्स मार्टिन बनेट थे।

परगुराम से तूराम की यात्रा के तीन सोपान थे। पहला शिल्डू से परगुराम गुण्ड और वापस, सन् १९४७ के जाड़ा में, दूसरा शिल्डू से जालंधर सन् १९४५ के ग्राष्म में, और तीसरा जालंधर से तूराम (खैर घाट) कोहाट और वापस दिसम्बर १९४५ जनवरी १९४६ में। ये तीनों यात्राएँ लेखक का सैनिक सेवा से सम्बद्ध था, लगभग सन् १९४२-४४ में भारतीय सेना में कप्तान के पद पर रहा।

सन् १९२७-१९३० में लेखक छाहीर में पञ्चायत विश्वविद्यालय का छात्र था। नवम्बर १९३० में प्रातिमार्ग आन्दोलन के कारण से वह बंड़ी हुआ और सन् १९३४ तक जेल में रहा। तदुपरांत दो वर्ष नजरबंद भी रहा।

प्रस्तुत पुस्तक के दोना वृत्तांत 'जरे यायागर रहेगा याद?' नामक ग्रन्थ के अंग हैं, जो सन् १९५३ में प्रकाशित हुआ था।

सूची

परशुराम से तूरखम
निरगों की खाज म

पृष्ठ

१-७६

७७-१२८



हृत हैं कि सृष्टि की मयोंतम आहृति चक्र है—
क्योंकि उस का आदिअन कुछ नहीं है। मन देग
की मित्रमित्र सँसरा-चाटी, बच्ची-बच्चा, ऊन
खान-सुको पर टुक्ने-टुक्ने अनरा बार
साचा है कि चक्राहृति में सौन्दर्य व गिए
रहृत अधिन नगर चाह न भा पाऊँ, अनरा
आदिअनदान गति-धनता का गंगा ता कर ही

नरता हूँ—आर यह भी कह सकता ह कि स्रष्टा सुन्दर न हा पर भा
म ससार व अलिप्त सौन्दर्य की नाव हूँ, क्योंकि मैं ससृष्टि की नींव हूँ।
ससृष्टि और सभ्यता व विज्ञान में अगि व अन्तरण व गंग जा दूसरा
सीता मानव प्राणी बना, यह म हूँ या यों कह गलिए कि देवताओं
व समुद्रमंथन से जेमे सत्रेण उल्लिखि अग्नि का हुई, उमा प्रनार
मानवमन-रवी महासागर व मंथन से जो श्रेष्ठ नवनात प्राप्त हुआ, वह है
चक्राचार का उद्भावन

यह म कह रहा हूँ तो चक्र मान व साधारण प्रतिनिधि का हैखियन
से, नहा ता यक्ति रूप म म एक अकिंचन यायावर हूँ, और अपने हा
जमे यायावर 'श्री इन पदियां न लपन जा' का सहारा—कथानि म
उन ना गाना का एक टायर हूँ

आर म जो राम कहाना कहूंगा वह भा मेरा राम कहाना इस लिए
है कि वह मरे चालन ना कहानी है। अपने अनुभव का दूसरे व—अन
मानिक व—इतिवृत्त व रूप म रहन हा ता मयाग-सगत है वैगय
मच राधा आर कृष्ण व जीवन में अपने रागविराग गल दते व, म
अपने प्रतीक पुरुष का हा आधार बनाता हूँ। तुलना आय का उन्वालयन
रग ता यह न शून्य कि नैसा मुशद हागा, वमा हा घोर हागा, उस स
बना वहाँ स आयाग।

मिस्टर पीटर रोलिंग स्लोन

हैव यू एनी मॉस ?

नो सर नो सर आइ' म

रनिंग एट द डॉस ।

अपने प्रताप पुरुष का मिस्टर रोलिंग स्लोन नहा कहूँगा, बायावर कहूँगा पर बात उही है—

चल चला देता है लाद-लाद कर बार-बार बन-बारा

सब ठाठ धरा रह जाता धन बस दूर भित्तिज का तारा ।

याना र का भरत चाचीस परस हा चले, किंतु इन नीच न ता वह 'अपन पैरा तले घास (या मॉस !) जमने दे सता है', न कुछ ठाठ बना सका है न भित्तिज का कुछ निरुत्पन्न सता है—उस क तारे का छून का तो बात ही क्या । नितन स्वयं उसन देते जहाँ बैठ कर कपियो न देहो पर दमीर उगा लिये जहाँ मुनि तपस्या करत परते पापाय हा गये जहाँ देवता चम कर परत शृङ्ग बन गये, वहाँ मानसो ने ऐहिक काशाओं-गमनाओं से मुक्त पायो—किन्तु बायावर ने समझा है कि दरता भा जहाँ मिस्टर म रक नि शिला हा गये, और प्राग-संचार क लिए पट्टी गत है गति, गति, गति ! छुपन म चीनी कहावता क एक सग्रह में जिस वक्त्र ने उन सर से अधिक प्रभावित किया था और निम उमन अपना गुग्गुन मान कर टायरी क मुत्र पृष्ठ पर लिख लिया था, वह था

म क्या चाहें कि मेरी अस्थियाँ भी मेरे पुरखों की अस्थियों क साथ एक सुरजित समाधि-रूप में दबी रहें ? वहाँ भी कोई चला जाये, वहीं कोई हरा भरा पहाड़ी मिट जायगा'



पूर्व—असम

बायावर का असम म पर नानरी ही भक्कन की मिली, तब उसे लगा माना भित्तिज का तारा कुछ निरुत्पन्न आ गया है । किंतु जन जापाना

अभियान जग और पड़ाख रानर गिर गया और काम का दमान भी कुछ हल्का पड़ा, तब उसने समय लिया कि जल्दी ही इस सीमान्त से थारा तरित हाना होगा। इसी लिए जब पूर्वी सीमा प्रान्त ने भा पूर्वोत्तर प्रान्त का दोरा उस के हिस्से पड़ा, तब उस ने तत्परता से स्वीकार लिया, और दोर के प्राप्ताम में कई ऐसे भी स्थान जा गये जो प्राय दोरा करने वाले अपसरा की सूचा में दूरे जाया करते हैं—चाहे इस लिए कि 'वहाँ भग क्या काम होगा?' या 'चाहे इस लिए कि 'कोन आफत का मारा वहाँ जायगा?' मन ही मन यह भी ठान लिया कि दार पर ही 'अपने कायम की तात्कालिक आवश्यकतानुसार बगल सड़ने' के अधिकार का भरपूर उपयोग किया जायगा—क्योंकि दार का पन्नी स कुछ इधर या कुछ उधर या कुछ आगे हा तो बेस-बैन स्थान पड़ते हैं।

यायावर को इस मार की दृक मिला, उस की हालत बहुत अच्छी न था। वह कि उस में एक टापर ही बस ऐसा था जिस का भरोसा किया जा सन, ता जस मेरी आत्म-गना न समझा जाय। एचिन अगारह हजार मील रन कर चुका था—और अगारह हजार फीची मील नितने लम्बे होते हैं, वह सुत्तमोगी मिल्लिया गाडियो की जानता हैं!—कौच सन दूटे हुए थे, फावुरेयर ससज था, तार गल गय थे, बैरा बल्लने लायत भी, डायनमो बीच बीच में चला करना छा देता था, ब्रेक कमजोर थे तिस पर यायावर को रात में गावा चलाने का व्यसन है, और वह बहुत दूर-दूर का मार्गों शाम का रखता तिस से पार रात के सताट में सारी सज्य पर निराध अधिकार हो, कहीं रुकना न पड़े, पन्नी स उतरना न पड़े, किसी की भूल न पावनी पड़े, और शान्ति से साचा जा सके, नयो पुला कर कामरुपा रात का रहस्यमयी मुगध ली जा सके, जयन्तव बीच राह में चाक कर रहे हुए किसी वन्य जन्तु की चमकता अगार आँस देती जा सके, फिर वह गहरा हा, कि स्नेहनी सियार, कि वन बिलार कि जगला और रात की दोर में एक यह भी सुविधा था कि पमी नमो रैन जमेर की समझा अपन-आप हल हो जाती थी।

किन्तु इस द्रुत व साथ रात की दाँव कैसे हा ? यायावर को चिन्ता नहीं । वह गाड़ी स्वय चलता है, गुरुपन की रातें हैं, उस व शरीर में शायद विगमिन करोगन यो भी यथेष्ट है कथाकि बत्ती चगये बिना गाँव दीटाने म उस की ओँला को काइ कर नहा हाता । मलि यह मिग्ध औंधरा ता वचार का सहायन है—और चौँना म पूरा प्रदेश दीखता है जय कि बत्ती जलान से कवड सटक दीस हा उन्ती है और परिषान्न पर कालिख पुत जाती ह ।

तिनमुनिया से आग कोइ बनचाप नहा है तो क । हुआ ? यायावर व पर म चकर है, तिमग म चकर है, भ्रामरो याग म उसने जम लिया है आर सनाचर की साँ साती चल रही है—कथा मन्त्रानेवाली इतनी शक्तियों उस की रुका गाँव का चग न देंगी ? कब उस उत्तरपूज का सीमान्त फिर छूना मिरेगा, कब फिर ब्रह्मपुत्र की सप्रतल यात्रा का आरम्भ मिट, परशुराम का तपोवन आर कुँ, कुटिनपुर व उन महलों व अवषाज जहाँ पैर कर रुक्मिणा व कृष्ण का प्रताप की होगी गडे, हाथा आर मिटून (अरना भसा) द्वारा सजित कलानन, आगार आर मिन्मी आर खाम्मी वन्म जातियों व आत्रयता सन्ध्या सामाप्रदेश व दुर्भेय जगल देसन का मिर्ग और चारोंच त्रि न ही ता माप पूर्णिमा है, तिस त्रि पशुराम कुट पर मेला गना है निस्मदेह यायावर का माया प्रन्दिर ट्रैक म चाना मृत पन्ना ह, वहाँ उस बहुत काम है आर उस व लिए दारे व मोशम मे हर पर करता ही हागा !

❀ ❀ ❀ ❀

मनुआ घाँ अमम रण्य की छाग गन्म का उत्तरप्राय अन्तिम स्टेशन है । तिनमुकिग स पचास पचवन मीन गन की पन्ना व साथ साथ सङ्क जातो है । राह में मन्नुमा का अमरीनी छावनी और फिर एक बग चाना गिरि लय कर अनन्य चाय गगान, नगी-उपनगी ओर यत्र व दूँ पाव कर न मनुआ घाँ का गैग पन्ता है । किन्तु काइ मन्व ल रि घाँ पँरुन हा नगी मिठ बायगी ता भूल करेगा, यत्रपि

नाम की घाट के बाद स नदी का पार आरम्भ हो जाता है। दो तीन मील आर आगे बन्दर फिर सट्टा खा जाती है और मीलों रेतों में चलना पड़ता है, तब जा कर वहाँ ब्रह्मपुत्र का उतारा मिलता है, जहाँ गङ्गा नाल पर लट कर पार लगायी जाती है। पार उतर कर फिर दो-तीन मील रेतों, आर फिर सड़क पर चढ़ कर सदिया का ठोर मिल जाता है, कुछ आगे जानार है और बायें का मुड़ कर दो तीन मील जा कर सदिया का दुग, छावनी और कचहरी आदि

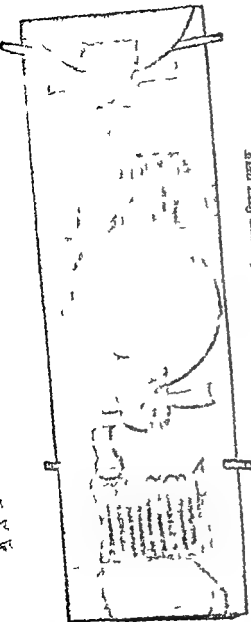
यायावर का ट्रक सड़क हाउस पर जा रुका। मुझे तब विधाम मिला यायावर ने कमरे में सामान जमाया और नक्शा ल कर देना। शाम को अग्रेज पोलिटिकल एजेंट से मिल कर 'भीतरी सामा' के पार के प्रवेश में जाने का परमिट लिया और बाकी तैयारी अगले दिन पर छोड़ दी, ताकि इस बीच ट्रक की आर मेरी कुछ छातिर कर ली जाय

सन्ध्या सीमा प्रदेश तो है ही, वहाँ का पोलिटिकल एजेंट सीव गवर्नर के अधीन होता, आर उस के तथा सदिया के सैनिक कमांडर के हाथ में संपूर्ण शक्ति केन्द्रित होती। भारत में ब्रिताना शासन को हट करने में किस तरह सीमा प्रांतों या 'विण्डे' प्रदेशों के पोलिटिकल एजेंटों और इसाइ प्रचारकों का चाली नामन का साथ रहा है, इस में अययन के लिए असम के सामा प्रदेशों का-सा क्षेत्र और न मिलेगा। यायावर प्राय कहा करता कि देश की पराधीनता सब से अधिक अस्तरती है तो एक अपन हिमालय के अंग, ससार के सब से ऊँचे शिखर का नाम 'एवरेस्ट' मुन कर, और एक सीमा प्रदेशों में जाने के परमिट के लिए फिरगी पोलिटिकल एजेंट के दफ्तर में जा कर। देश की प्रत्येक सीमा तार्थ होता है, नहीं तो देश पुण्यभूमि कैसे होता है! पर अपने ही तीव्र तक जाने के लिए पर देशीय सत्ता के अहम्मान्य प्रतिनिधि का मुँह जोहना जैसा चुमता है, उसे मुक्तमागी जानते हैं

सदिया प्रन्धियर ट्रैक में भी दो सीमाएँ हैं। एक भीतरी सीमा, एक सीमा। यों तो सदिया में घुसने वाले प्रत्येक व्यक्ति का आने का कारण,

ठहरने की अवधि आदि यौरा देना पड़ता है, पर भीतरी सीमा तब जान के लिए व्यक्ति को और अधिक कुछ नहीं करना पड़ता। किन्तु इस सामान्य क पार जान के परमिष्ट पोलिटिकल एक्ट्स सब देता है, और वह सब या सब के लिए सहल नहीं होता। माघ मेले के समय परगुराम जाने वाले यात्री जा कर उसी गिन लोगने का, या रात भर ठहरने का परमिष्ट तो फीस दे कर पा लेते हैं, अन्य समय या अन्य प्रकार के परमिष्ट के लिए पूरी जाँच होती है। सदिया से लगभग चालास मील आगे टामेइ तक मान्य जाती है, परगुराम के लिए फिर टामेइ घाट पर ब्रह्मपुर (जो यहाँ पर इन्हित चहलाती है, इसी का संस्कृत नाम जा महामारत में मिलता है लोहित्य है) पार कर के चार-पाँच मील पैल जंगल पार करना पड़ता है। किन्तु आरह ग्रीन मील जा कर ही भीतर सीमा पर पहुँच जाते हैं।

सदिया से तान चार मील जा कर ही ब्रह्मपुर की एक उपनदा पार करना पड़ती है, जो अब कुँटिल चहलाती है। प्रसिद्धि है कि इस नदी के किनारे मुनिपुर की राजधानी थी, और यहाँ से रुक्मिणी का लेन कृष्ण आये थे। पुराने रिवाजों से पता चलता है कि इस शताब्दी के आरम्भ में भी यहाँ 'अति प्राचीन' परजाट आदि के खडहर थे, किन्तु जहाँ इन के पाय जान का बणन था, वहाँ पर नहीं सब के नकशों में लिखा है 'इम्पनट्रेन्ट फारेस्ट'—अभेद्य जंगल। और यह अभेद्यता का यो चित्र अतिरिक्त नहा, यह बाजार न खम परत कर देल लिया। इस नदी पर पुल नहीं है और गाँव को नाका पर लाद कर पार करना पड़ता है जब तक यह है। तब तक बाजार न नदी माग से उस जंगल में घुसने का साधा, क्योंकि स्थल न टुमैय जाट टोपी में पैरकर जाने वाले के लिए गतना टुमैय नहीं रहता पर जंगल ही उसने समझ लिया कि दो चार गिन का पुस्तक न है ता पताल करना भी यथ है



पहाने राक्षसों—होपडे विवाह पर मंगलार्चन मिट्टा मलक

कटली-वन

जिसने वह नहीं
दगा, वह नहा मानेगा
कि संस्तुत वाक्या म
कटली-वन में निचरते
हाथियों का जो वणन
मिलना है, वह अजर
सदा हासकता है। जगती
होगहा नर इतने गटे
जगत् कि ग घटे मोर
दोग नर मा पार न
हा और उन की
चिन्नी, गहरी, हरी छाही
में कहा हाथियों के दंड,
और यही गी शानी
नता मे घूमते मिट्टन
मिट्टन अरना भसा हो
हाता है, किन्तु अरने भने
सदहा अधिक् गटे गरीर
वाला आर पुर्तोग
बन्ध जातिदों समा मिट्टन
की पूज मानता है, कुछ
जातियों अपने को मिट्टन
पुगेत्यत्र बताता है और
मिट्टन को अपना पुत्र
मा नर पूजता है।
कहाँ नहीं मा। मिट्टन
पालते भी हैं

बारह एक मील जाकर होल् गौव का छाग पटान था, जहाँ अमरीकी सैनिकों ने शायद रेडियो चौकी बना रखा था। पत्रिका एजेंट ने बताया था कि यहाँ ४ सैनिकों ने मिट्टून के घोड़े में मिमियों की कुछ झंसे मार डाली थीं फिर एनट के बाच-उचाव कर के हरजाना ग्लान पर किसी तरह निगारा हो सका था। अमरीका प्राय किसी के मुन्तेल में किसी को मारते आर फिर हरजाना भरत रहते थे। जहाँ ऐसी घटना या घटनाएँ हो जायँ, यहाँ कुछ देर के लिए एगरी बर्षों बहुत अप्रिय हो जाती—क्याकि बनवासियों के लिए सब फाजी एक हैं, फिर फाजियों में आपस में भले ही यह हो कि अग्रेज अमरीकी को मूर्ख कह, अमरीकी अग्रेज का असामाजिक, या हिन्दुस्तानी एक को दम्मी और एक को आनारा। तभी यायावर इस प्रदेश में बिना सतक भाव से मान चल रहा था। कुछ राह चले मिमिया न हाथ उठा कर गाड़ी रोकी तो उसने इन पर चारों की पीछ बिना तो गिया, और मुन्-मुन् पर उन की आर का उहाँ की-सी खुले चौड़ा हँसी हँसता रहा, पर मन ही मन साचता रहा कि इन ४ फाजी पर उसे हुए तार धनुष आर फर से लोसे हुए लौंडे फिसल फिसल काम आ सकते हैं पर अपन-अपन पड़ाव पर ये आतषि उतरत गये और एक अद्भुत मूढ-य स्वर में घबघात कर और हँस कर चलत गये मिनू के बाद जब अन्तिम कुछ मील के जंगल में प्रवेश हुआ, तब उन की अत्यन्त उची-नीची फाड़ और फाच की फिगान मरा कबो सन्के पार करने के लिए ट्रक में रह गये कबड यायावर, उस का अनुचर चातबहादुर लामा, और कुन्दनसिंह जो फमा शिन् में नगरपात्रिका (म्युनिमिपैत्रि) का महतर था, निन्तु यायावर के साथ पहले अटला हुआ था आर फिर ट्रक का क्लानर—जिस के लिए वह बतन पाता था नासिमिय डाइवर का—और जिस को अगर कबड फमा 'डाइवर साइवर' कह कर आशान दे देता तो वह ऐसा विमोर हो कर झुन्न लगता माना अर गिरा, अर गिरा

जंगल पार कर के पत्त के तन जा कर बनाये हुए एक फाटघर के नाच ट्रक रुका। यह गमद का पत्तन था, जहाँ से उत्तर का एक

रास्ता रोमा (उत्तरी कमा) को जाता है। कभी यह भारत और चीन को जोड़ने वाला एक मार्ग रहा होगा, पर अब नहीं। उन दिनों अवश्य इस की नयी 'सड़' हुई थी और सड़क बनाने का निचार हो रहा था, आरम्भ का कुछ अंश बना भी था। पटान से कुछ आगे ही मिमियों की छांगी सी बस्ती थी, वहाँ एक नग घड़ग बच्चे आ कर ट्रक को दलने लगे। दो-तीन पत्नीज आ कर त्रुहित का किनारा मिला। नदी यहाँ बेगवती थी, निमल जल में नीचे पत्थर दीप्त पड़ते थे, पर यहाँ भी उस का रूप वैसा था जैसा पहाड़ जोड़ने पर नदी का होता है—लगभग जैसा द्वीपीयेश में गंगा का है—यद्यपि यहाँ के जगल की तुलना नहीं है।

नद पार कर के चार मील जगल का रास्ता। जगल में बीच-बीच में खुला घासभरा प्रदेश आ जाता, जिस में महाकाय लेमल फ घबल-गात पट मानों आगमिष्यत् रत्न प्रसूतों की छुट गती हुई पूरानुभूति से कल्पित हो रहे थे और वहीं कहीं किशुरों के छरसुर। कुछ ही दिन में इन में आग तिल जायगी पहाड़ियों के पार्श्व को चिपकती हुई, लपलगाती एक के बाद एक रूप को लीकती हुई ऊपर तक फैल जायगी, और प्रसन्नपुत्र का बालुना के पीले उच्चरीय में लिपन हुआ नील गात, मानों बसन्त श्री ने लाल चुम्बनों से मुद्राकित हो उठेगा। फिर धारे धारे मद उमरेगा और उस का उद्बुद्ध पोष्य आसपास के प्रदेश को लील लेना चाहगा—गेल लेगा—और अपनी सफलता के ले से पिन्न और गँढल हो उठेगा

किन्तु रूपक की ओर दूर तक लीकना आवश्यक नहीं है, चट्टानों के बीच की गली से हो कर यायावर एक कुछ खुरी जगह पहुँच कर टिटक गया है। सामने परागाम का कुछ है।

कुछ वास्तव में प्रसन्नपुत्र की घारा का ही एक आयत है। नद अब समतल भूमि में प्रविष्ट होता है तब, मानो महासागर में अपनी चरम

निष्पत्ति की राज म अभिनिष्क्रमण का निश्चय कर के भा, एक बार वह पीछे मुड़ कर महान् स्थिर-चेता हिमालय का दर्शन कर लेना चाहता है जिस के आश्रय में उस ने अपनी लगभग आधी यात्रा हँसते-खेलते उठलन-कुदतें हाँ तय कर ली है। मंडलानार घूम कर, हिमालय की चराख ले कर, फिर वह घोर गति से आगे बढ़ जाता है। आवत के दाहिना ओर, जहाँ धारा पहले टकराती है, कुछ ऊँचाई पर पहाड़ के पाँच सप्प साता पूरता है जिस का जल आ कर कुँड में पड़ता है, यह सोता ब्रह्मधारा है। याया ओर जिस क्षिपार के पर छूता हुआ ब्रह्मपुत्र आगे बहता है उस पर एक छाया सा मंदिर है। यायावर जहाँ जल हाँ कर दृश्य देखता है, वहाँ पाछे जलते का चादर और लकड़ी का कई एक पाठरियों हैं, जहाँ यात्रा रात में ठहर करते हैं।

यायावर ठिठन कर देखना रहता है। इसी तरह कभी परशुराम भी वहीं पर ठिठन कर हाँ मर दृश्य का देखते रह जाते, और तब उहाने जाना हाँगा कि उन का राम ठाँक था और यहाँ उन की आत्मा शान्ति पायेगा। तब उहाने नाचे उतर कर स्नान किया हाँगा और मनस्वान मिगन का उपक्रम करन से पहले गरीर का क्लान्ति धोयी होगी

कथा है कि पिता का आह्ला से मातृ-वध करने के पश्चात् परशुराम के मन में गगनि हुई, और वह पिता के आश्रयस्थान देने पर भी अपने का मातृमृत के महापातक से मुक्त न मान सके। बहुत तपस्या कर के भी जब उन के मन से पाप का कटुप न धुँग, तब एक दिन भगवान् ने उन्हें शान में दर्शन दे कर उहें ब्रह्मपुत्र के इस कुँड में स्नान करन का आदेश किया और कहा कि वहाँ तपस्या करन से उनका मन का पापनार हाँगा। परशुराम शान्त हुए इस स्थान पर पहुँचें कुँड में आर फिर ब्रह्मधारा के नाचे स्नान कर के उहोंने तपस्या की और पाप के पात्र से मुक्त हुए।

यायावर ने कुँड में और फिर धारा के नाचे स्नान किया। कुँड का वह दृश्य-सा दृश्य है, सान का ब्रह्म गम। अतः इसी क्रम से स्नान करना

अन्यत मुग्ध प्रतीत होता है। स्नान से पाप धुल जाते हैं, पाप ता
 दाखते नहीं, अतः उनका दृश्य प्रतीक के रूप में निम्न चित्रा से स्नान
 किया जाता है उन्हें कुंड पर ही उठा देन की प्रथा है। इस सरल उपाय
 से यात्री अपने पाप वहाँ छोड़ कर चले आ सकते हैं। यात्रा कर गया
 तब तो कुंड पर सजाना था, पर सनान्ति आदि के स्नानों पर अब मांटे
 लगाता है, तब मुग्धुओं से अविश्रुत उत्साह उन के पाप माचन के लिए
 वहाँ जुट हुए मित्रों की पुण्य दिखाते हैं। मुग्ध नहा कर निश्चिन्त निकल
 कि मुक्ति पथ के ये सहायक उस का धोता-गमला लगे जा कुंड हो लौंच
 रहते हैं, आर कमा कमा मुग्धु का उस परम निष्पाप अवस्था में ही अपने
 सूने कपड़ों तब जाना पड़ता है। इस का निरोध सम्भव नहीं है, यहाँ रीति
 चली आयी है। और सम्भव मुग्धुओं का पाप का मोक्ष इस प्रतीक के द्वारा दान
 का अधिकार सदा से असम्भव उपन्यास-वाला मित्रियों का रहा है। विनसित
 नागरिक सम्प्रदाय पापों का बाह्य अविवक्षित वय जातियों द्वारा दान
 जाता है। इस सत्य का यह रीति सत्य स्तिता अयपूर्ण प्रतीक है,
 इस का और क्याचिन् दोनों ही पक्षों का ध्यान कभी नहीं जाता
 होगा !



दूसरे तब पहुँचते न पहुँचते दिन ठहर गया। गाँव का लायनेमो चान
 नहीं करता अतः उन्नी तो जलाये न जायगी, अन्ते में ही गाँव चाना
 हागा। जितनी जगह हा घर, जंगल का पहल बहुत घना आर कीचड़
 वाला रंग पार कर लिया था, उस के बाद पत्त सड़क पर बक कर वहाँ
 थाय बनायी जायगा आर फिर चौद ठट आने पर आगे रंग जायगा

जंगल पार हो लिया गया। धाँच में वहाँ नहीं मान पर रास्ते से
 थोड़ा भटक कर फिर उल्टा गे कर पथ खोजना पना, किन्तु निरोध
 असुविधा न हुई।

पक्की सड़क पर आ कर जल्दी चली चाय पी गयी। शौद निकल आया, और शस्ता तथा वन्य प्रवेश कुठ साफ टीखने लगा, पर गाड़ी चलते ही हल्की-सी धुंध छाने लगी और दीर्घता असम्भव हो गया।

घाटे धीरे चलते रहे। आधा रास्ता तय हो चुका था, और कुछ मील जा कर होलोगॉव आयेगा जहाँ अमरीकी ठिंया है और पास ही जंगलों का विभाग का बँगला।

हनात् स्विचिंग लखनाया और एक छद्म हुआ, जिस का हिन्ना अभिधा 'धन्नाम' से बँगला का ध्वनितुमारी 'धन्नाम' में कहीं अधिक सजा बता है। पक्कर। यायावर न पहले स्विचिंग सँभाल कर फिर ब्रेक लगा दिये, गाड़ी रुक गयी।

पहिया देखा गया। अधिकार में आचार निकाल कर टंगले गये जैक को धुरी पर नीचे रखा गया। जैक नीचा था, नीचे जमीन भा पोली थी, उसे बर्मान लिए पत्थर की जरूरत होगी। यायावर न कुन्दनसिंह को पत्थर ढूँढ लाने के लिए कहा, और समय स्मैर ले कर नये पहिय का खालन लगा।

नया पहिया पक्कर वाले पहिये के साथ ठिका दिया गया। टिबरिया को एक-एक चक्कर घुमा कर नज़र कर लिया गया अब धुरी उठे तो पहिया खाला जाय। पर कुन्दनसिंह का कोई पता नहीं। यायावर ने थोड़ा प्रतीक्षा की, फिर भुनभुनाते हुए जा कर समय पत्थर ढूँढने लगा। पत्थर ले कर लौग तब अमा कुन्दनसिंह का फाड़ चिह्न नहा था। यायावर ने पत्थर डमा कर जैक उठाया, और पहिय की त्रिरियों खोलने लगा। स्मैर के एक-एक चक्कर के साथ-साथ उस का पास एक-एक टिगरी चक्का जा रहा था।

सब त्रिरियों खाल कर जब पहिया गिराया गया तब अपने बड़े पौडा वृक्ष का दमरुवर उखाटा हुआ नौ पत्थर उठाये कुन्दनसिंह धुंध में न अचानक हुआ। यायावर न दात पाग कर कहा, 'मित्र गये तुम्हें पत्थर।'

उजड़ का मुस्मान परमात्मा है, वह मुस्कान का स्पष्ट उता देता है कि जन्म मुझ में अपना दोष समझने का ही बुद्धि नहीं तब आप का माघ कैसे समझें।
वही मुस्मान कुन्दनसिंह के चेहर पर था। उससे बात कर जोग, 'नी,
जरा टहर गया था।'

यायावर और भी द्रुद्ध स्वर में कुठ कहन ही जा रहा था कि कुन्दनसिंह ने घैने हा कहा, 'जरा सोंप लट गया था।'
यायावर अवान्। सोंप काट गया। 'गया' नहीं, 'गया था'। वह भी 'जरा'। थोड़ी देर बाद उसे ध्यान हुआ कि इतनी देर में उसने कुठ कहा ही नहीं है कुठ कहना जरूरी है। पर फरे क्या इस आदमा को? अपनी अममयता पर गुस्सा है उसका प्रश्न में प्रकट हुआ, 'सोंप मर गया कि नहीं?'

इस प्रश्न का अर्थ कुन्दनसिंह की बुद्धि का स्पष्टता जाहर था।
उसने अवचका कर कहा, 'नी?'

'तुम को जिस सोंप ने काटा, वह मर गया कि नहीं? कम-से कम दौत तो टूट गये होंगे?' कहता हुआ यायावर भी उठा। दूर में स पनी खोल, माचिस, मोमरत्ता, दवा का बक्का आदि निकाल कर कुन्दनसिंह की टांग देवने पर माथम हुआ कि सोंप ने नीन की पं का ऊपर से काटा था, दौत हलके लग। पाक से निशान जरा खोख कर उस में दवा मल दी गयी, फिर पहिया फिज कर क गागा चली। रात बारह घने के लगभग बुझिल नगी पार कर ने थोड़ा देर में सदिया पहुँच गये। सड़ि हाउस में जा तेज का लेख्य चल रहा था, उस की दाति ऐसा लगी, मानों यभा उतना प्रकाश न देता है। साथ ही उस 'ठीक ठिकाने' परमे म निन भर क जगल क हय्य माना स्वप्न की तरह खो गये—वैने हा बहिष्कृत हो गये जैम फिरगी पालिक्कल एजेंगे क दफ्तरो से घनबादी फरियादी तात्ति पर दिय जाते होंगे।

लेकिन यायावर क मन म जो जगल का पुकार मँचती है, उस सड़ि हाउस क कमरे की दीवार नहीं राक सनती

सर्गिया का प्रदेश कामरूप के इतिहास के कुछ स्मारक अपन गहन वनों में छिपाये हैं। कुछ की झोंकी पर तब मिन्ती रहा है, कुछ कभी देखे जा सकते थे लेकिन अब बिल्कुल ही लुप्त हो गये हैं। सर्दिया भा प्राचीन 'सुर्गिया' राज्य का अंग्रेज है, जो स्वयं कदाचित् महाभारतकालीन राजा भीष्मक के वंश के हास के बाद खना हुआ था। प्राचीन इतिहास की शोध में यहाँ जाना अनार्यय है, किन्तु सर्गिया की सुपत्ति मनोरञ्जक है।

कथा है कि भीष्मक का एक बगधर वीरपाठ (अथवा नारवर) सोनागिरि का राजा था। उस की रानी रूपवती ने पुत्रलाभ के लिए कुंवर की स्तुति की। कुंवर एक दिन उस के पति का रूप धारण कर रूपवती के पास आया। रूपवती ने उन्हें नहीं पहचाना और उन के साथ रमण किया। अनन्तर वारपाल को कुंवर ने स्वप्न में दान दे कर आदेश दिया कि एक वृक्ष की छेद के नीचे जा कर देखे, वहाँ तो कुछ उस मिले उसे पूज्य मान कर ग्रहण करे। वीरपाठ वृक्ष के नीचे गया वहाँ उसे एक तलवार एक ढाल, और ढाल से ढकी हुई एक सोने की शिन्नी मिली। कालान्तर में रूपवती ने पुत्र प्रसव किया जिस का नाम गौरीनारायण रखा गया। यहाँ कुंवर पुत्र गौरीनारायण वारपाल के बाद राजा हुआ और रत्नराजपाल के निरुपस प्रसिद्ध हुआ। अठमीया भाषा की एक सुरजी (हस्तलिखित इतिहास ग्रन्थ) से विहित होता है कि उसने शक स ११४६ (ईसवी १२४४) में राज्य ग्रहण किया।

तत्पश्चात् न राजा भद्रसेन का पराजित कर के एक नया नगर नसाया जिस का नाम लखपुर रखा। उस के पराक्रम ने उस के राज्य का बहुत विस्तार किया। सुरजा - अनुसार नगाठ के मुसलमान नगाटनीन मगध मन्त्र की नीति से उसने मैत्रा स्थापित की और मुसलमान ने उस समय समय पर गयाज भजना स्वीकार किया और राज्य में परगुमान कुल का पाना चाहा।

तत्पश्चात् का एक पुत्र उस समय नगाठ में गाढ़वर राजा के पास शिरा के लिए रहता था। इस कुमार का वंश में ही मृत्यु हो गयी। मुसलमान राजा की गह-सरदार निधि से अनभिज्ञ हान के कारण गौरीनार

ने कुमार का शव उसका पिता के पास भेजने का निश्चय किया।
रत्नचन्द्र तब उद्दित क तट पर सिंधुक्षेत्र में एक नया महल बनवा रहा
था। यही सिंधुक्षेत्र में कुमार का शव उस दिया गया, और इसी घटना
के कारण उस स्थान का नाम स दिया (जहाँ शव दिया गया) पड़ गया।
तब से यही नाम प्रचलित है।

वर्तमान देवरिया मुर्गिया जाति के लोग अपने को क्षत्रिय बताते हैं।
सम्भव है कि 'मुर्गिया' भी 'क्षत्रिय' से बना हो। जा हो उन की भाषा
में हिन्दी संस्कृत शब्द प्रभूत हैं, और बुरजी में लिखा है कि जब मुर्गिया
वर्मा से असम आये तब कबल उहा क पास लिपि थी, जिन से मित्र होता
है कि यह जाति साधर और संस्कृत थी। अब भी देवरिया जाति उच्च जाति
मानी जाती है और उन के घरों में हर काई प्रशस्ति भी नहीं पा सकता।

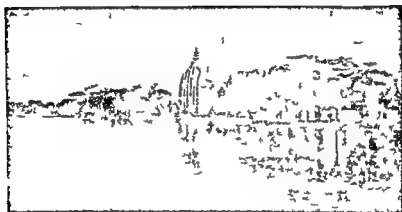
मुर्गिया राजा तान्त्रिक थे, और उन के रनवाये हुए ताम्रपदारी देवी के
मन्दिर के अग्रशिष्ट अब भी सदिया के उत्तर में पाये जाते हैं। सन् १८४८
में एक अंग्रेज यात्री ने यह मन्दिर देखा था उस का तोंबे का फल
तब टूट कर अलग पड़ा हुआ था। अब यह प्रदेश जंगल ने लीला
लिया है। अनुमान किया जाता है कि पहले ब्रह्मपुत्र की धारा यही बहता
थी, लम्बे का पाठ क्रमशः दक्षिण की हटता गया और तब दुर्लभ होने से
उत्तरा प्रदेश उन्नत गये। कालान्तर में अहोम आक्रमणों से परास्त होने पर
मुर्गियों का वैभव मिट ही गया, तब से उत्तरी प्रदेश जंगल के आक्रमण की भी न
रोक सका और डूब गये। अहमम में अन्यत्र कई स्थानों पर ऐसा हुआ है।^२

* * * * *

राज्यी तिनमुर्गिया तक नहीं पहुँचा। हुमटुमा से कुछ आगे जैत्रा
की शक्ति समाप्त हो गया, एंजिन रुक ही गया। हायोमो में सफाई

२ सन् १९५० के भूकम्प से उद्दित और सदिया के निकट उससे
मिलनवाली डि हाग की धाराओं में अनक परिवर्तन हुए हैं। जिस स्थान के
कारण ब्रह्मपुत्र में वह आसक्त बना था जो परपुराम कुँडा था, वह स्थान
भी घँस गया है, कुछ अब नहीं है। —लं०

आदि कर व जो काम चलाने प्रयोग किये जा सकते थे, किये गये, पर यथ। अन्त में एक अमरीका ट्रेन के पीछे जुन कर विमग्नते हुए तिन मुनिया पहुँचे, जहाँ तान चार दिन गानी टाक गन परान में लग गय।



शिवसागर

तिनमुनिया रेल का पेशान है। यहाँ ॥ एक गहन तो सीधा मेलुआ घाट चगी गया है, एक ओर पून का मुन कर डिगनह व तेन्थेन का पार कर व मागरिग और लडा जाती है जहाँ से बमा चीन वाली सडक का आरम्भ होता है। प्रस्तुत प्रतीक म उस क्षन का बयन अनावश्यक है।

यो ता यह यात्रा बिनाप यहाँ से आगे अप्रासंगिक हो जाती, क्यानि तिनमुनिया से टिन्गु लानकर दायावर न अपना फायदून फिर पकडा, और जम तन्नासा एक प्रकार की मकन अवन श्रुत सूत्र व सहारे पट पर घट जाता है और फिर श्रुता है, वेम हा उस व सहार प्रमथ अपन कट्टर शिष्ट जा पहुँचा जहाँ स फिर नया अभियान आरम्भ हुआ। किन्तु एकाधिक रिता में हा सही, परगुगम कुन स उत्तर पश्चिम का यात्रा घर घीर अन्तर होता ही रहा, और यहाँ न्पतर आदि गाण बानो का छान व मकन न मुख्य निदय को हा लिय रहना अभीष्ट है,

त्रिवन्ध्रमागर ।

द्वैत में स श, घ, स्र का जैन 'उ' उच्चारण होता है, वैसे असमाया में स्र 'ह' हो जाते हैं। इसी लिए 'त्रिवन्ध्रमागर' मा 'द्विवन्ध्रमागर' उच्चारित होता है (यद्यपि अंग्रेजी लिखन उच्चारण 'त्रिवन्ध्रमागर' व प्रमाण स वैसा उच्चारण असमायीयों में भी प्रचलित रहा है)। यह नली एक न तात व किनारे बसी है जो अहमद साबरमती में बनी था, और इसलिये एक अक्षरन माना जाता है कि उस का तल आसमान व प्रदश स लगभग तात कुछ ऊँचा है, फिर मा ता सग मरा रहता है—अर्थात् उस का तल मा लगभग एक मा रहता है। इस सागर व किनार तान मन्दिर है और यहाँ स बारहा न रात पर रुद्रमागर आर अपसागर न किनार आर मन्दिर और महत्त मी। शिवविह आर स्त्रिविह प्रताप अहमद राजा थे, और जयमती एक बार नारा जिन का नाम असम का रखा गया जानता है और जिस का चरित असमायी का उत्तम दश प्रेम का पाठ सिखाता है।

बारहा—नवगोव—गौहा।। गाहा का उत्तर में 'मुग हाग' है—असमाया मुगरी (गुगण) का प्रसिद्ध प्राचान हा। यह असमाया कामरूप राज्य की राजधानी और प्रमुख नगर कन्द्र ता रहा हो, इस अतिरिक्त नाला चल पर स्थित कामारना देवा व मन्दिर व कारण इस का पार्ति और भी फंग। असमाया लग तो निराकाराशक्त वैष्णव है, पर कामाख्य व दशन व लिए हवाता उगाला प्रति वप आत है। श्रद्धार्थियों को देव व पदा का जो छुट उन पर दृष्टता है, यह वगल शब्द की ध्वनि पडत ही सतमेयी का तरह मुगर उत्साह प्रदर्शित करत लगता है, किन्तु अथ मायाया की सुन कर अप्रतिम हो कर प्राप कहता है, 'अर एग ता जोगानी नर'—अर य तो बगानी नहीं है। और असमाया माया सुन कर तो पडावृद्ध बसा ही भीहव हो जाता है जैन प्रमाण व समय का छाग नरद।

मध्य असम से पन्ना

यायावर को आह्ला मिली कि पौंच गात्रियों का 'कानसाइ' ले कर असम से पञ्जाब जाय—असम से उस का छोटी-सा टोली का स्थानान्तरित किया जा रहा था और भी घर में उस का साथ देने पञ्जाब और सीमाप्रान्त में हाग

या तो तैयारियों समा तरह की होती हैं, पर उन में 'कानसाइ' की तैयारी का एक विशद स्थान होता है—टीक बैग तम बुगारों में चूना गुगार का । इतना कह कर उस में विशद वणन को छोड़ देना चाहिए—क्योंकि आखिर तो वह तैयारी ही है न, समय अभियान तो नहीं ।

अप्रैल का एक गाते दिन मार होते ही 'साइ चला जनजारा' । अमा शुभ पुग था, क्या क कारण और भी फीका । यायावर का मन स्तब्ध था । उसने लिये सत्र दिन उसरे हैं, कहीं यात्रान्त तो है ही नहीं, इस लिए कहीं से चलने पर उगस हाना निरधन है, किन्तु किसी किसी पटाव पर जो शान्ति और सह मिल जाता है, उस का आरपग तो बना ही रहता है । रह, मगर राह पर आज जा मिला उस आज की स्थिति नहा । कउ का पायेय मानना हागा और चन्ना हागा । क्या यायावर चउ । 'जहाँ भी कोइ चला जान, वहाँ कोइ हरी भरी पहान मिग जायगी । नल का पायेय मिग है तो इतल हो प्रणाम कर, आर आग न ।

शिल्ल न पहउ उतार का चउ का घात्रिया से निरल कर उडा पाना नग पर करक नग गुग हुरियाग का पहानियों में उदरा की सन लहरन ला, तब क्या जा कर यायावर का मन चता, और चत कर आग का उन्मुग हा गा । गाहाग पार कर क नीलाचल की

छाया में हाते हुए 'कानका' पगड़बाना का निक्का, जा अस्सीया रेशम
 का रंग मंगा है आर फिर गहिरने को ब्रह्मपुत्र और गाय का मसिया



गौहाटी में ब्रह्मपुत्र का दृश्य

(सामने उसकी लम्बी और समान भूरे का द्वीप)

पथ से आता हुआ गारा पनत श्रेणी रखते हुए एक कर गालपाया जा

रक्षा । यहीं से कुछ आगे चोगी गुफा का घाट है, वहाँ नाव पर लाने पर गाड़ियाँ ब्रह्मपुत्र के पार उतारी जायेंगी और कूचबिहार का रास्ता पर ढंगी । रात ब्याल्पाटे में ब्रह्मपुत्र के किनारे एक टापे पर गने हुए रैंगल में काटी, आर सबेरे चोगीगुफा के घाट पर जा पहुँचे । चोगीगुफा नाम का इतिहास है । आसपाम का घनप्रदेश तात्रिशा की साधना का क्षेत्र था और यहाँ उनकी अनेक गुफाएँ हैं । यह भी प्रसिद्धि है कि तेरहवीं शती के आरम्भ में जब तुर्कों ने बिहार से गुजर कर कामरूप पर आक्रमण किया, तब इहीं गुफाओं में रहनेवाले तात्रिशा के अभिजात से उनकी पराजय हुई । इस प्रसिद्धि की ऐतिहासिकता का कोई दावा नहीं । इतना अत्यन्त है कि ब्रह्मपुत्र के दाहिने तट पर बसा तरागीन राजधानी पर अधिकार कर के जब मलिक उज्जरक नदी की बाढ़ से बचने के लिए बाँधे किनारे की पहाड़ियों से लग-लगे नगीरे प्रवाह का आर उतराने लगा, तब गारा पहाड़ियों की ललहाटों में ही उसकी सेना भङ्ग गया । तुफ इतिहासकार मिनहज ने मलिक उज्जरक के अभियान का वर्णन करते हुए लिखा है कि देश में कृषि की उन्नत और समृद्ध अवस्था देख कर मलिक उज्जरक ने अन्न भर रखना आवश्यक नहीं समझा था । जब चैन का करना का समय आया तब राजा और सारी प्रजा न विद्रोह कर दिया भारतराज चौध खाल पिय । मलिक उज्जरक और उसकी सेना अत मथ हा गया और भूगर्भ मरन लगी । तब उसने पीठ हटाने का निश्चय किया । समस्त प्रत्यक्ष में पाना भरा था और हिन्दू प्रसन्न थे, (अतः) मुसलमानों ने एक पथरा के ताले कर पहाड़ की तराही से हो कर बान की सोचा । किन्तु कुछ पथरा जा कर वे सँकरा पगलिया और पानियों में रत गये । महमा नामन और पाठ हिन्दुओं ने आनन्द किया । एक तग घाट में मानन हाथियों का लगाना हुआ मुसलमान सना के पैर उठाने गये और हिन्दू-मुसलमान सुखमय हुआ गया । तभी हाथी पर सवार मलिक उज्जरक — तीर लगा, बह गिरा और बन्नी कर लिया गया । फिर उसका परिवार के सब लोग और सारी सेना बन्दी कर ली

गया।' यह 'दुष्टना' चाह तांत्रिका के प्रताप से हुई हो चाहे नहीं, इस में संदेह नहीं कि घानी म से जाती हुई सेना पर आक्रमण आमपास की पहलुडियाँ की गुफाआ से जने मफज्जा न साथ लिया जा सकता है, और सम्प्रतया लिया गया होगा, तभी तो उनरक की सेना 'सहसा' आगे पीछे से आक्रा त हा कर परास्त हो गयी होगी।



चोगीगुफा से नद पार कर न एक रास्ता धुनटा हो पर फलफले का है, किन्तु यह अच्छा नहा है और 'कानगाई' अच्छी सत्का पर ही चलत है जब तक कि लाचारी न हो, इस लिए कूचनिहार की सड़क पकड़ी गयी। तीसरे पहर तक 'कानगाई' उचनिहार की सीमा में प्रविष्ट हो गया था कूचनिहार पहुँचा जा सकता था, किन्तु रात में बड़े शहर में टहरने की जगह का षट हो सकता है यह सब यायावर जानते हैं। अत कुछ पहले ही दीनहटा न छोटे सफरी रँगले न आगे गाणियों रोक दो गया। बैंगला ता बौसा का घना हुआ 'नासा' ही था ओर फमरों में जगह भी नहीं थी, पर ग्रामदे न कच्चे फर्श पर बौस की चगाइयों रिठी थी, ओर चारों तरफ खुला घसीचा भी था रात बाने न लिए और क्या चाहिए ? इधर प्राय दिन ठिप ही हाट पटता है, दीनहटा का बाजार अभी उठा नहीं था, फेले, शान तरकारी, अंटे आदि बिक रह थे

सबेरे कूचनिहार स गुजर। छोटी सी सुन्दर नगरी है। नाम बास्त्व में कूचनिहार होना चाहिए, क्योंकि काच जाति का राजधानी है। किसी समय कूच साम्राज्य बहुत फैला हुआ था और उस की धान दूर दूर तक थी। नौर राजवंश में कद प्रतापी राजा हुए जिन में नरनारायण (६० सोल्हवा शता) मय प्रसिद्ध है। नरनारायण तथा उस न भाइ एव प्रधान सेनापति मुकुध्वज ने आसाम पर आक्रमण कर के बहुत-सा प्रदेश जीत लिया था। मुकुध्वज न दूर-दूर जा कर शमटा मारने के कत्तों न कारण उस का नाम 'बील राय' पन गया था। एक दूसरे भाई कमल गाहाइ (गाहाई) ने उत्तरी आसाम न आर पार वह सत्क बनवायो थे जिस क

असौप कुठ वष पहले तक मिलत थे आर जो अच्छिहार त सन्या तन जाती थी। अन वह सन्त तुगम तगठ में खा गया है आर उस प्रदग में कोइ सन्त रहा ही नहा। सात्या ज्ञान व गिए इछपुन पार कर क राय किनारे स जाना पन्ता ह। आर सैखुजा म फिर ताहिनी पार जात है।

नरनारायण आर उस - माय्यों न कागी में गिया पाया थी। राजा हान पर नरनारायण क शिष्याप्रेम का काति फेन लगा ओर धुरधुर त विद्वान् उस की सभा में आन गग। कोच सन्त तो सनातन मता-छत्री था किन्तु नरनारायण का कार्ति मुन बंगाल क स्मात आचार्य रघुनन्दन मट्टाचार्य भा वहाँ पहुँचे। मठाचार्य महोदय शास्त्रार्थ प्रवीण थे, आर बंगाल, बिहार, उतासा क गहुत रु पटिता को पन्ती दे चुन थे। उन का सहज स्मात मत इस भूभाग में गहुत प्रचलित मी हा गया था। कोच राज सभा म समादत हान पर कोच साध्याय मी उन का अनुयायी हो जायगा, त्स की उहँ पूरी आगा था। देवात् कोच राज पुराहित सायभोम मट्टाचार्य का दहात कुठ ही माम पहले हा चुना था, इस लिए विराध की कोइ आगा मा न थी।

किन्तु सायभोम का विषय न राज-सभा में कहला भेजा कि बिगन पति का प्रतिष्ठा क गिए वहा स्मात आचार्य स शास्त्रार्थ करेगी। राजा न तन्नुसार शात्रार्थ ना निन आर समय नियत कर दिय, और राय्य न विद्वानों का निमन्त्रण भेज गिय गग।

ए- गिया का इतना मया। रघुनन्दन पटित न इस बाधा का क्षुद्र माना। छा स तन्मना न शात्रार्थ करन म समय क्यों नष्ट किया जाय यह सोच कर निन निन मे पहल निन व मय त्रात्रण न घर पर पहुँचे। यहाँ न निमन्त्रण हा गार, ममा उन - निमन्त्रण आधिकार का माथा हागा।

रामदास का उहल गग धन - माय्य करना स्मात अनुमान पदति मना।। स्मात पदति न कवल सन्त और योग्य है, वरन् वही प्रबन्ध टा पदति ह, इस मत ना प्राप्तमान्य जय व कर चुन, तब निमन्त्रण दूग, 'आचार्य का पदति ना रह है, उन म भित अनुमान माय्य

होगा या नहीं और प्राचीन मतानुसार दण्डित ब्राह्मण कुलान ब्राह्मण माता जायगा या नहीं ? खुन्नन् न नश्यत् भाव स कहा, 'नहीं, ऐसे अनुगान मान्य नहीं होंगे, और प्राचीन मतानुसार दा ग पानेवाग ब्राह्मण अश्र होगा ।'

ब्राह्मण ने पूछा 'अच्छा तो ऐसे ब्राह्मण का विधान क्या मान्य होगा ?'

खुन्नन् पाहत ने उक्त से प्रमाण द कर निद्व निवा कि ऐसे अष्ट ब्राह्मण का विधान श्रुतया अमान्य है ।

तब सारभौम का बिचवा तनिर नुस्खाना । बानी, 'आचार्य के माता पिता का विवाह तो आचार्य का अनुगान रक्षति न अनुसार न हुआ होगा ? उन क पिता की गीता भी प्राचीन पद्धति क अनुसार हा हु हागा ? तो अष्ट कुलान ब्राह्मण का मत क्या मान्य समझा जायगा ?'

अगले दिन जब रात-भूमा में गान्नाथ आरम्भ करने का समय आया, तो खुन्नन् महाचार्य वही न दाग्य ।

काच साम्राज्य का प्रसार मणिपुर तक हुआ था—कम से कम मणिपुर, जयन्ती, त्रिपुरा आदि क राजा काच सम्राट को बापिन करतो दत्त हा थे । नरनाथयग ने कामाख्या क मन्दिर का पुनर्निर्माण करायो था । कुछ हा काल पछि कालापहाड न आ नर मन्दिर का ध्वस किया, निन्तु उस क (चाह उडासा क विद्रोह क कारण, चाहे नरनाथयग आर अहोम राज्य क न्य सैन्य समूह त डर कर) कले जान पर मन्दिर फिर मराया गया आर नरनाथयग तथा चाल सय न उस की प्रतिष्ठा की । इस आशय का एक प्रतर तैम मी कामाख्या न मन्दिर में है, जिस का समय शक १४८७ मिया है ।



बूचबिहार से सिलिगुण का मार्ग जब 'द्वार प्रदेश' त गुप्तता है तब उग्र की शाना अनू हा जाता है । इस अक्ष म हिमालय न बाहर द्वार' है इही द्वारों से भोग्ये, नशाय, तिन्ती आर पवताय नाना जानियो क लग भारत में आत-आते थे—कुछ ताय करन, कुछ व्यापारी, कुछ भू-गोडन, कुछ दशाकाश, कुछ उग्र द्वार प्रदेश में अब भी

कई स्थानों पर थोड़ा मेले लगते हैं। चाय के बगानों की इस प्रदेश में भरमार है जहाँ-जहाँ पत्रिका जो दावागिरी पर्वत मूठ की ओर बढ़ता है, वहाँ-वहाँ चाय के नए छोट, नए सारे पाषाणों के पीछे हिमालय का नयी नयी हिमालयगति घाटों का भयंकर रूप सामने आता जाता है। उन हृदय के अनिर्वचनीय सादय का वहाँ जान सस्ता है। चाय गार उम की अलंकार निरपेक्ष भयता का अस्मात् यन्त्र-सा सा कर लक्षणों का हो और फिर सैमला हाँ और जिसने बस यपडे नहा पाय, वह उन कवि हृदय में पैर कर उसने सय का अपना भी नहीं सस्ता जिस की अनुभूति ने वाणी पा कर कहा होगा—

हिरण्यगम समवतताम भूतस्य चात पतिरेक आसीत् ।

स दाधार पृथिवीं घामुता मा कर्म द्वाय हविषा रिधम ॥

हार प्रदेश का एक न दूरे अंगीपुर हार। वहाँ से आगे ओरों में फैले पार करत बाबावर का टटारा तिल्ला नदी के पुल की आर गता। इस हृदय नदी पर स्थायी पुल नदीन के लिए सत्तन सुत ऊंची चला है और पुल न पक्कल एक गनीय स्थल है वरन् इतिनिगरी रिता का एक नया करिमा मा है। पुल नदीन का है, आसपास दोनों ओर कुछ मेल तन सत्तन मा फंकारन का बनाया गये है रिता मा नदीन नह न जाय। पुल स हा एक रास्ता कश्चिरी के लिए अलग हा जाता है। 'कानवा' नदी सा-घाना स मा आर चत्तार उतार गीना हुआ पुठ पार कर के तिन टिगते मित्रिगुनी का पटुवा। गली स दो मल पहले ही एक खुले मैदान में नैकन पावा गान्धर्वों का था—यही कश्चिरी कैव था। वहाँ बाबावर का कानवा' मा एक तरफ करान स आ गया हुआ सन न उतर कर टोंग सीधी की आर फिर कुछ गान-पान की खाव में निकल।

दो मित्रिगुनी से पृथग्ना का राता जाता है और व। से का हार हा कर फिर वही स्थान स गंगा पार की जा सकती है। इधर से एक नया पावा सत्तन बना था वा अमम एगोच रात पहलाता था और जो पत्तनाय के पास माह नदी रात में जा मित्रता थी। सिन्धु इस

सड़क की अवस्था क गारे में जो कुछ पता चला था उस के आधार पर यही निश्चय किया गया कि सिलिगुड़ी से टून में लड़ कर चलफते जाया जाय, और वहा से फिर सड़क पकड़ी जाय। अतः डेढ़ दिन की दौड़ धूप के राद वैसी ही बरस्था कर ला गयी। एक पीजा मालगानी तीसरी रात को टूटने लागी थी सबसे ही 'कानवाद' की मोटर का रेल-टेलों पर लाद दिया गया। पूरा माफगाड़ी जल मार्ग ले जाने वाले ट्रेनों की थी—आगे आठ स गाणियों एम्बुलंस की थीं, फिर एक अमरीकी टोली जिस में दातीन 'जाप' आर आर दम गड ट्रक थ आर चालका में कुछ गारे अमरीका आर गानी नागो। सवार हाते ही गोरों ने ग्रामाफोन पर भटभटात बेज नाचा क तन चढा लिये थे और नीगो ने बैना टुन टुना कर गाना और हँसना शुरू किया था। आकण ओंलो की रात कवियों में गूँत चलती है, असल में आनर्ग तो हँसी हाता है जो नाग्रा हँसता है। बहुत ही स्पष्ट आवाज में जैसे दूज-तीज को चाँद क उजले थ क ऊपर नभा कभा झासा टुनासा पूरा चॉर भा गीसता है, वैसे ही हँसते नीग्रा चेहर में दाँता का पौंती चमकती ह। इन क बाद बाबावार की गानी, फिर कुछ गोरों पौनी कुछ ट्रका क साथ, एक-आध आहत टक, आर फिर सैफना छोटी गनी टूनी जुटा लयपथ गाणिया—जिन में प्राय कवल गान्वर ही गान्वर थे।

रात ग्यारह क आस पाग गूँत देर तन गगगाने और हिचकिया लेन क बाद गानी चर पनी। खुले ठले थ, गारा का मासम ट्रक की पीठ में सगा कर सँजरी गान लगा कर बाबावर लेट गया और तारे देखने लगा। एंजिन क रोये गाला में भरने लग। गानी की गति गता ता सन कपडे गतनी जोर से फफफाने लगे कि नींद असम्भव थी, ओर चाल धीमी पडती तो मन्डर गीणियों नाचने लगने। हवा क कारण मनहरा नहीं लग सगती थी जिन मर मनाया था कि रात हो तो गानी चले, स्टेशन यात्र की मीन में स निकल कर सोचा जाय, रात मर मनात बीती कि सबेरा हो तो मच्छर से निस्तार हो।

दिन हुआ। बाबावर ने साचा कि अब कहीं गागा रगा होगी तो मुँह हाथ धो कर कुछ खाने की सोची जायगा पर गागी रगी हानी तो आटे स्टेशन पर या बड़े स्टेशन के पास पहुँचती हुई पर स्टेशन से एक टेढ़ी मील गहरा ही। मुगही में थोड़ा सा पानी रखा गया था, उमा से काम चलाया गया। चाय के लिए रंग जगना अगम्य था—इतनी आड़ नहीं थी, और खड़ी गाड़ी में जलाते तो पाना गोलने से पहले गागा चल पत्ती! अमरीकियों की देखादेखी एंजिन से तामचाना न मग में गम पानी ले कर उसी में चाय की पत्ता, और टिम्बे का दूध मिलाया चाय में किसी चीज का रंग था तो धुँए का

दिन भर गैर सिरता रहा। फास कि बदला गिर आती। मित्रता के बाद गाम हुआ और गाल धिरेने गये। थोड़ी देर में बघा आरम्भ हो गयी। फिर कुछ देर गाल मूलक बरसन गये। गाल पत्तर से दूका में गाल दिया गया था—आशा थी कि रात में ही कभी बैरकपुर पहुँच जायेंगे जहाँ उतर कर कैम्प में रात रहना होगा। भीते भीगत यात्रार नो उस गाल का कहाना गाल आया जो गमिन घोनी का हावता हुआ चला जा रहा था थर कर नाचने लगा कि रुई एक घोना होता ता क्यों उने धागा हॉरते पैरल चरना पडता। राठ में ही घोनी ब्या गयी। गाल न गडर का बर पर गाल आर फिर चला तब लम्बो सॉल ल कर गुन की आर मुगतिर हो कर बोना, 'बाह रे सला-सबरा, तरा उगी अरर ना बरिहारी—मौगा था नाच, द दिया ऊर।' "

रपुर पचु। अथान बैरकपुर न पाम नहा गुन-अररे म एक सार्निग पर गागा रगा द गयी। जहाँ भा हा, गेट से उतरना ता ह हा —४। जा पाठ है व क्या मामन गाल ना सोना का मीना देंग ? पना गाल दूक उत्तर ग्य। न च पर्सरी धता ता है ना हागा सो हागा, बरसन दो मूलक ।

तब एक बर 'नानाद' के पाग आ कर गला, आर फाचा पुगिन के गाल गेट डल। गालर न गाल का रगर केप का था, जहाँ रहने

माने का प्रयत्न है और वे दोनों मांग लिये—कैम्प काइ चार मील है।

तो सप्तासधरा कभी रुमा नाचे माँगने पर नाचे भी दता है।
अद्भुतल्लाह !

* * * *

और आर वृष्टि में काइ दूर मटक न पाय, इस निवार से सन गात्रियों को आगे रत कर अन्तिम गाड़ी यायानर ने अपना रखा। अगले द्वादशर ने कहा गया कि वह जाप के पीठ हा ले और उसे आँगों-आट न होने दे।

गैडा फिर चला। एक माल, दो मील, तीन मील चार मील—अब तो कैम्प पास ही होगा। 'कानबाइ' मुन—क्या आ गय? पाँच मील। फिर मोड़—यह होगा। जायद उठे मैगन में कैम्प हा। छ माल। सात माल। आठ माल। ना माल दस—दसवें मील में हठात् 'कानबाइ' रुक गया। सनाग—नवल निरमिच पर मूसलधार वृष्टि का शब्द, टपा टप-टप, दसादर दन।

यायानर लाइन तोड़ कर आगे गया। अगल गाडा का द्वादशर निश्चय बैठ था सामने जीप नहीं थी।

“क्या हुआ ?”

“जीप गाडी ता री गिया, सा’ २।”

“देते री गया ? तुम्हारा ध्यान किधर था ?”

“आप गाला था गाडा का पाटू लाल उची दंगते रहने का। हम दसा लेनिन किन्वा औपरा में गुम हा गया। फिर हम सोचा आग मिडगा। लेनिन द्धर रास्ता बन्द है।”

अब ? अब कहीं मरना तो आर मरना जाना हागा, उचित वहा है कि यही पर मरना की जाय। जाय समय खोजन आयेगा अरदय

ले घट राद वह आया। गौराशाहा भाग में या बहुत से शब्द ऐसे होत हैं जिन्हें फाफार जानत हा नहीं कुछ ऐम हात हैं जिन्हें वे

शायन इधामध कोश म नहीं देते कि शाना कोश फीका न जान पन्ने
ग। ऐस ही चायनीगर बहुत स श द ट्राइवर पर उठ कर साजें।
ने यायावर को 'कानवाइ' लगान को कहा आर मुझाया नि अत्र की
यायावर सय आग रह ताकि अनुसरण ठान हो सन। वसा ही किया
गया। रात सांने शरह नन कैम्प न मोतर जुने। रास्ते एन-एन पुन
पानी न नीचे ये गौसा न फग कांचन हा रह थ। खाना नो रखा गया
था सो न जान क्या हुआ क्यारि लगर वाले ता अत्र सा गय थे। एक
गारन खाला पन थी, उमा में कुछ गौसों से पट तरत भी थ।

खाना न सहा, गाले कपन उठ कर पाठ ता सीधी की जाय,
यायावर यह साच ही रहा था नि सूचना मिला, 'कानवाइ' की पिठगी
गानी नहीं आयी है।

यायावर की गाता फिर गारन निरुगे—अरुग। नो गाडी रह गयी
थी, उस का नैपाग टाइवर यथष्ट मूय था—अत जहाँ उमने जाना
होगा नि वह भयक गवा, वहीँ रुक ता गा होगा पर उस क वा
भा गाता थ साथ हा रहगा इसका भराणा नहीं था। कहा पाम
चरम में सासा हा सक्तता हा या वाय क हा एक कुहा की आशा
हा ता नह गाता छा कर चल देगा। आर कहा कलवा की गथ आसपास
मन गता ता सम

कैम्प स स्टेशन तक गो चक्कर लग। गानी का पता न मिला।
तीव्र चक्कर में समता उठ कर इधर उधर क मार्ग की आर गलिया
की गात्र का गया। यायावर गमग निराग हो चग था कि एन अहाते
क बाहर एन बग। गाता न पाठ एक छुट्टा दूक गग्य त्रिम की रेखाकृति
कुठ पहचाना-मा लगी। रुक कर दगा अनुमान ठान था। ट्राइवर ने
हताय हा कर सा ज्ञान का निचन किया था पर नम लन धोने की दूसर
पन का पूँउ क अतरत आर उनित्र स्वीकार्य नह हाता, वैसे ही
'कानवाइ' ट्राइवर मा लूम दूक क पाठ न सग कर हा चन की सौस